



International Journal of Advanced Academic Studies

E-ISSN: 2706-8927

P-ISSN: 2706-8919

www.allstudyjournal.com

IJAAS 2021; 3(3): 69-69

Received: 17-05-2021

Accepted: 19-06-2021

सुजाता चारण

शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग,
मोहन लाल सुखाडिया विश्वविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान, भारत

“कृषि एवं ग्रामीण विकास में शिक्षा की भूमिका”

सुजाता चारण

सारांश

शिक्षा समाज का दर्पण है। यह मनुष्य को अज्ञानता से आत्मज्ञान में बदल देता है। 1964 में यूनेस्को के सम्मेलन ने माना की “अशिक्षा सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए एक गंभीर बाधा है।” भारत की ज्यादातर आबादी गाँवों में बसती है और इनकी आजीविका का मुख्य स्रोत कृषि है। शिक्षा कृषि एवं ग्रामीण विकास दोनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में आज भी लगभग आधे गाँवों की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक स्थिति बेहद कमजोर है। यहां पर शिक्षा की अगर बात करे तो ‘शिक्षा की वार्षिक रिपोर्ट’ नाम के सर्वे से पता चलता है कि भले ही ग्रामीण छात्रों के स्कूल जाने की संख्या बढ़ रही हो पर इनमें से आधे से ज्यादा छात्र दूसरी कक्षा तक की किताब पढ़ने में असमर्थ है। अर्थात् यहां पर ग्रामीण विकास के लिए शिक्षा को बढ़ावा देना जरूरी है। उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ और ओडिसा और भी अन्य राज्यों के प्रत्येक गाँव में आज भी स्कूल नहीं है। इसके चलते माता-पिता बच्चों को स्कूल नहीं भेज पाते हैं जिससे भी ग्रामीण शिक्षा विफल रही है। ग्रामीण विकास आमतौर पर अपेक्षाकृत पृथक और कम आबादी वाले क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन की गुणवत्ता और आर्थिक कल्याण में सुधार की प्रक्रियाओं को संदर्भित करता है। ग्रामीण विकास में आधारभूत सुविधाएं जैसे स्कूल, स्वास्थ्य सुविधाएं, सड़क, पेयजल, विद्युतीकरण आदि सम्मिलित है। जिसमें शिक्षा भी एक है जिससे गाँवों के लोग इन सब सुविधाओं के प्रति जागरूक होंगे। आजादी के बाद देश के कृषि परिदृश्य में भी काफी बदलाव आये है। चाहे वह उत्पादकता हो या फिर कृषि सम्बन्धित उच्च शिक्षण के अवसर। कृषि विकास की बात करे तो इसमें कृषि उत्पादकता बढ़ाना, लघु एवं कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देना, उन्नत बीज एवं खाद उपलब्ध कराना, ऋण एवं सब्सिडी के माध्यम से उत्पादन संसाधन उपलब्ध कराना आदि सम्मिलित है। कृषि विकास में भी शिक्षा की अहम भूमिका होती है जैसे कृषि विकास के क्षेत्र में कई कृषि विश्वविद्यालयों ने अहम भूमिका निभाई है। कृषि क्षेत्र में इनके समन्वित प्रयासों के फलस्वरूप ही आज हम खाद्यान उत्पादन के मामले में आत्मनिर्भर हो सके हैं। कृषि में शिक्षा के फलस्वरूप ही हमने उत्पादन को लक्ष्य मानकर अधिक उत्पादन की उन्नत तकनीक, उन्नत बीज, रासायनिक ऊर्वरक, पौध संरक्षण तकनीकी एवं सिंचाई की विधियां विकसित की है। और इन सभी तकनीकों के प्रभाव से ही हमने उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है। साथ ही समग्र ग्रामीण एवं कृषि विकास हेतु समय – समय पर किसानों को कृषि संबंधी उत्पादों, मशीनरी, अनुसंधान, उन्नत किस्मों तथा कृषि के साथ पशुपालन, मत्स्य पालन, रेशम पालन आदि की जानकारी भी दी जाती है। इस प्रकार यह सब शिक्षा के द्वारा ही संभव हो पाया है क्योंकि लोग शिक्षित होंगे तो इन बातों से जागरूक होंगे जिससे ग्रामीण और कृषि विकास को बढ़ावा मिलेगा।

मुख्यशब्द: शिक्षा की भूमिका, अशिक्षा सामाजिक, विधियां विकसित

1. प्रस्तावना

शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है जो जन्म से शुरू होती है। एक बच्चा माता पिता और अन्य भाई-बहनो से घिरा होता है और अपने परिवेश और प्रक्रिया का अध्ययन करता है। आसपास के भौतिक और सामाजिक वातावरण से वह जानकारी प्राप्त करता है और उससे कुछ सीखने की कोशिश करता है और प्रतिक्रिया करता है। ग्रामीण विकास आमतौर पर अपेक्षाकृत पृथक और कम आबादी वाले क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन की गुणवत्ता और आर्थिक कल्याण में सुधार की प्रक्रियाओं को संदर्भित करता है। हालांकि, वैश्विक उत्पादन नेटवर्क में बदलाव और बढ़ते शहरीकरण ने ग्रामीण क्षेत्रों के चरित्र को बदल दिया है। इस प्रकार जब कृषि विकास की बात करे तो यह व्यापक रूप से माना जाता है कि पारंपरिक कृषि शिक्षा अब नहीं मिल रही है। आज विकासशील दुनिया को पहले से ज्यादा नए कृषि ज्ञान की जरूरत है। कृषि के क्षेत्र में बाजारों की प्रतिस्पर्धा, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों तक पहुंच कम, जैव विविधता और नए कीटों एवं रोगों का फैलना आदि अनेक समस्याएं हैं। आजादी के बाद देश के कृषि परिदृश्य में भी काफी बदलाव आये है। चाहे वह उत्पादकता हो या फिर कृषि सम्बन्धित उच्च शिक्षण के अवसर। कृषि विकास की बात करे तो इसमें कृषि उत्पादकता बढ़ाना, लघु एवं कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देना, उन्नत बीज एवं खाद उपलब्ध कराना, ऋण एवं सब्सिडी के माध्यम से उत्पादन संसाधन उपलब्ध कराना आदि सम्मिलित है। और ये सभी उद्देश्य कृषि से शिक्षा को सम्बन्धित कर ही प्राप्त किये जा सकते हैं।

Corresponding Author:

सुजाता चारण

शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग,
मोहन लाल सुखाडिया विश्वविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान, भारत

इसलिए सरकार द्वारा भी समय-समय पर कृषि विकास कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जिसमें कृषि के बारे में विस्तृत बताया जाता है परन्तु इन सब बातों के लिए सबसे पहली जरूरत है लोगों में शिक्षा क्योंकि अगर लोग शिक्षित होंगे तो ही इन सारे महत्वों को समझ सकेंगे जिससे ग्रामीण और कृषि दोनों तरह का विकास होगा।

2. ग्रामीण विकास में शिक्षा की भूमिका

शिक्षा, आर्थिक, सामाजिक और भौतिक विकास ही ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ग्रामीण क्षेत्र एक दूसरे से अत्यन्त विशिष्ट हैं इस कारण वैश्विक स्तर पर ग्रामीण विकास दृष्टिकोणों की एक बड़ी विविधता है। ग्रामीण विकास क्रियाएं ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए होती हैं। वास्तव में कई विकसित देशों में ग्रामीण विकास कार्यक्रम बहुत सक्रिय हैं। इसमें सरकार ने भी कई प्रयास किये हैं जिनका उद्देश्य अविकसित गांवों का विकास करना है। ग्रामीण विकास में शिक्षा की अहम भूमिका होती है यह ग्रामीण विकास को नियंत्रित करती है एवं समस्याओं का निराकरण करती है। शिक्षा ग्रामीण क्षेत्रों की जरूरतों का निदान करती है, उनके अधिकारों का दावा करती है, उनके जीवन को प्रभावित करने वाले फैसलों पर नियंत्रण रखती है, ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशिक्षित जनशक्ति प्रदान करती है, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों को जोड़ती है, रोजगार एवं आय के स्रोत प्रदान करती है। ग्रामीण विकास का उद्देश्य ग्रामीण लोगों की भागीदारी के साथ ग्रामीण जीवन को बेहतर बनाने के तरीकों को खोजना है ताकि ग्रामीण क्षेत्रों की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रम ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आपूर्ति, उत्पादन, विपणन, कार्मिक रखरखाव, शिक्षा, स्वास्थ्य, शासन की ग्रामीण प्रणालियों में शिक्षा की अहम भूमिका है। शिक्षा के कार्यों में सामाजिक परिवर्तन करना, व्यक्तिगत विकास, जीवन स्तर में सुधार, सांस्कृतिक विकास आदि सम्मिलित है। इस प्रकार जब शिक्षा से ग्रामीण विकास होगा तो गांवों में ही रोजगार के आवसर होंगे जिससे पलायन की समस्या भी नहीं होगी।

इस प्रकार ग्रामीण विकास के लिए समय – समय पर शिक्षा की विभिन्न योजनाएं एवं कार्यक्रम चलाए गये जिनमें से कुछ निम्नानुसार है –

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986

इसका उद्देश्य शिक्षा में एकरूपता लाना, प्राथमिक शिक्षा एवं बालिका शिक्षा को बढ़ावा देना है।

सर्व शिक्षा अभियान

2010 तक 6 से 14 वर्ष के बच्चों को प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराना।

शिक्षा का अधिकार

शिक्षा का अधिकार 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए एक मौलिक अधिकार है इनके लिए निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान है। इस कारण अब भारत की साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत है।

कस्तुरबा गाँधी बालिका विद्यालय – जुलाई 2004 से

मध्याह्न भोजन योजना – 15 अगस्त 1995 से

3. कृषि विकास में शिक्षा की भूमिका

कृषि विकास में भी शिक्षा की अहम भूमिका होती है जैसे कृषि विकास के क्षेत्र में कई कृषि विश्वविद्यालयों ने अहम भूमिका निभाई है। कृषि क्षेत्र में इनके समन्वित प्रयासों के फलस्वरूप ही

आज हम खाद्यान उत्पादन के मामले में आत्मनिर्भर हो सके हैं। कृषि में शिक्षा के फलस्वरूप ही हमने उत्पादन को लक्ष्य मानकर अधिक उत्पादन की उन्नत तकनीक, उन्नत बीज, रासायनिक ऊर्वरक, पौध संरक्षण तकनीकी एवं सिंचाई की विधियां विकसित की हैं। कृषि विकास की बात करे तो इसमें कृषि उत्पादकता बढ़ाना, लघु एवं कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देना, उन्नत बीज एवं खाद उपलब्ध कराना, ऋण एवं सब्सिडी के माध्यम से उत्पादन संसाधन उपलब्ध कराना आदि सम्मिलित है। पारंपरिक कृषि शिक्षा अब नहीं मिल रही है, आज विकासशील दुनिया को पहले से ज्यादा नए कृषि ज्ञान की जरूरत है। कृषि के क्षेत्र में बाजारों की प्रतिस्पर्धा, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों तक पहुंच कम, जैव विविधता और नए कीटों एवं रोगों का फैलना आदि अनेक समस्याएं हैं। भारत एक कृषि प्रधान देश है यहां की 80 प्रतिशत आबादी कृषि पर निर्भर है। वर्तमान में कृषि को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जैसे कम उत्पादकता, खेती में लाभप्रदता कम होना, गुणवत्ता प्रतिस्पर्धा, मशीनाकरण का निम्न स्तर, ग्रामीण क्षेत्रों में यातायात एवं शहर तक पहुंच का अभाव, कृषिगत जानकारी की कमी, प्राकृतिक घटनाएं आदि अनेक चुनौतियां हैं परन्तु यदि लोगों को शिक्षित है तो इनसे निपट सकते हैं क्योंकि सरकार ने समय-समय पर कृषि विकास हेतु कई योजनाएं चलाई जाती हैं वे इनको समझ सकते हैं।

इस प्रकार कृषि संबंधी भी अनेक योजनाएं हैं जैसे कृषि विपणन, जैविक खेती योजना, मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना, सिंचाई योजनाएं, बागवानी योजनाएं, कृषि यंत्रिकरण और प्रौद्योगिकी योजनाएं, बीज, ऋण योजनाएं आदि। परन्तु इन सबके बारे में जानकारी हेतु व्यक्ति को जागरूक एवं शिक्षित होना अनिवार्य है। इसलिए कृषि विकास में भी शिक्षा की अहम भूमिका होती है।

4. उद्देश्य

शिक्षा ही ऐसी चीज है जो व्यक्ति का सर्वांगीण विकास कर सकती है अर्थात् सामाजिक, आर्थिक, नैतिक आदि। शिक्षा के माध्यम से ग्रामीण विकास एवं कृषि विकास संभव है। क्योंकि जब शिक्षा होगी तो ही व्यक्ति इन सब योजनाओं एवं कार्यक्रमों को समझ सकेगा जो ग्रामीण एवं कृषि विकास के लिए चलाई गयी हैं। शिक्षा समाज का दर्पण है, यह मनुष्य को अज्ञानता से आत्मज्ञान में बदल देता है। शिक्षा कृषि एवं ग्रामीण विकास दोनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में आज भी लगभग आधे गाँवों की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक स्थिति बेहद कमजोर है। इसलिए इस शिर्षक के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शिक्षा को बढ़ावा देना है जिससे दूरस्त एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का सम्पूर्ण विकास हो सके चाहे वह कृषि संबंधित हो या अन्य जैसे सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य लोगों की भागीदारी के साथ ग्रामीण जीवन को बेहतर बनाने के तरीकों को खोजना है।

5. निष्कर्ष

इस प्रकार इस शिर्षक का विस्तृत अध्ययन करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि शिक्षा सभी एक लिए आवश्यक है चाहे वह शहर में रहता हो या गांव में। परन्तु फिर भी शिक्षा की ग्रामीण क्षेत्रों में अहम भूमिका होती है क्योंकि यह ग्रामीण विकास को नियंत्रित करती है एवं समस्याओं का निराकरण करती है तथा साथ ही कृषिगत विकास को भी बढ़ावा देती है।

6. सन्दर्भ

1. व्यक्तिगत शोध के आधार पर
2. इन्टरनेट एवं पत्र-पत्रिकाएँ